प्रस्तावना

दलित साहित्य प्रगतिशील विचारों का पुंज है, यह वैचारिक क्रांति के द्वारा इन्सान को नए जीवन में ढालता है। जीवन की विकृतियों का विनाश करके उसे उत्थान, उन्नति और विकास की ओर अग्रसर करता है और स्वाभिमान से जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

समकालीन कथा साहित्य में प्रतिष्ठित एस. आर. हरनोट एक आंचलिक रचनाकार है। उन्होंने दलित एवं पिछड़े समाज की उन तमाम समस्याओं के बारे में समझा परखा और विमर्श के केंद्र मे लाने का महत्वपूर्ण प्रयास किया।

हरनोट के द्वारा लिखित 'हिडिम्ब' उपन्यास को पढ़ने के बाद मेरी रुचि इनकी अन्य रचनाओं के प्रति जगने लगी। जब मैंने इनकी 'जीनकाठी' कहानी को पढा तो काफी प्रभावित हुआ और इनकी कहानियों को अपने शोध विषय के लिए चुना। इनकी कहानियों में पिछड़े, दलित, स्त्री और किसान से लेकर समाज की तमाम समस्याओं को उठाया गया है। मैंने अपने शोध विषय के लिए हरनोट की कहानी संग्रहों मे से कुछ चुनिंदा कहानियों को चुना हैं जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक समस्याओं को जागृत किया गया है। इन कहानियों का गहनता से अध्ययन करने के बाद मैंने अपने शोध विषय को चार अध्यायों में विभाजित किया है।

पहला अध्याय एस. आर . हरनोट का जीवन एवं लेखन के नाम से है। जिसको मैंने दो उप-अध्यायों जीवन परिचय तथा रचना संसार में विभाजित किया है। जिसमें एस. आर. हरनोट के जीवन व उनकी अब तक की कई लेखनी पर चर्चा की गई है।

दूसरा अध्याय एस. आर.हरनोट की कहानियों में अभिव्यक्त दलित जीवन के नाम से है। जिसको मैंने छः उप-अध्यायों सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना का स्वरुप, दलित अस्मिता का सवाल, दलितों का जीवन संघर्ष, दलित स्त्रियों की त्रासदी, प्रतिरोध का स्वर और भूमंडलीकरण का प्रभाव में विभाजित किया है। इस अध्याय में मैंने दलित समाज के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक पक्ष की चर्चा की की गई है।

तीसरा अध्याय रचनाकार की वैचारिकी के नाम से है। इसको पुनः दो उप अध्यायों में रचनाकार की वैचारिकी और साहित्य का उद्देश्य के नाम से विभाजित किया गया है। इन अध्यायों में दलित साहित्य कैसा होना चाहिए उनके उद्देश्य क्या होने चाहिए के बारे में चर्चा की गई है तथा दलित रचनाकारों के विचारों के बारे में थोड़ी सी चर्चा काणे की कोशिश की है।

चौथा अध्याय एस. आर. हरनोट की कथा साहित्य का शिल्प के नाम से है। इसको मैंने दो उप अध्यायों भाषा शैली तथा संवाद के नाम विभाजित किया है। जिसमें इनकी कहानियों की भाषा व शैली पर बात की गई है।

***

उपसंहार

प्रस्तुत कहानियाँ आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में नए बुनावट को रेखांकित करती हैं। इन कहानियों के मूल में शोषित, पद दलित मनुष्यों की वह अछूती संवेदना को व्यापक यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया गया है। सामाजिक व्यवस्था के रूप में दलितों का जीवन, स्थानीय राजनीतिक, स्वार्थी दाव – पेंचों, परम्परागत धार्मिक रूढ़ियों, सामन्ती पूँजीवाद और सरकारी तंत्र के आर्थिक शोषण और सामाजिक विषमता के अन्याय से उत्पीड़ित है। शहर और ग्रामीण अंचल के विषम प्रवेश के प्रति जागृत होता, शोषित वर्ग शोषण के शिकंजे के विरुद्ध आवाज बुलंद कर रहा है। पशु से भी बदतर ज़िंदगी जीने वाले इन मनुष्य में अपने अस्तित्व के प्रति भाव बोध पैदा हुआ है।

इन कहानियों के संसार में समाज के उपेक्षित एवं पिछड़ी जातियों के जीवन की समस्या को उठाया गया है। इन कहानियों की मूल संवेदना में निम्न वर्गीय पद दलित समाज के नारकीय जीवन से उभरती शारीरिक एवं मानसिक वेदना की कसमसाहट है। तो वही सामाजिक विषमता, अन्याय, अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष करता हुआ जीवन व्यतीत कर रहा है। विषय व्यवस्था के मौजूद शोषण के संगठनों, सभ्य समाज की पशुता और हिंसक प्रवृत्तियों के विरुद्ध विद्रोही दलित मनुष्य अपने श्रम का मूल्य पहचानने और मानवीय अधिकार प्राप्त करने की शक्ति उभरी है। नारकीय परिस्थितियों में जीवन जीते हुए इनके संघर्षशील पात्रों में शोषण और कठोर यातनाओं के शिकार होने पर भी जीवन के प्रति बेदर्द, बेधड़क, अदम्य संघर्षात्मक जिजीविषा हमेशा विद्यमान रहती है। शोषित जीवन की मानवीय आशा और आकांक्षाओं को उभारने के साथ-साथ इन कहानियों ने समाज के शोषण दयनीय चेहरों को बेनकाब कर दिया है।

***